Prof. Khushbu Kumari
Guest Teacher,
Dept. of Political science
V.S.J. college, Rajnagar, Madhubani, lnmu

Class - B.A-3(H)
Paper - VI
Page No.
Date

Topic - अन्तराष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन का आदर्शवादी दृष्टिकोण

आदर्शवादी दृष्टिकोण का जन्म 18वीं सदी मे हुआ था। आदर्शवाद के प्रतिपादक हरबर्ट बटरफील्ड, ई. एच. कार, बर्टेन्ड रसेल, महात्मा गाँधी, वुड्रो विल्सन आदि है। आदर्शवादी दृष्टिकोण यथार्थवादी दृष्टिकोण के विरुद्ध नैतिक मूल्यों का समर्थक है यह एक ऐसी विश्व - व्यवस्था का समर्थन करता है जिसमें युद्ध, दण्डनीति तथा अत्याचार का अभाव हो। इस सिद्धान्त के समर्थक मानते है कि संसार में अत्याचार और संघर्ष का कारण परस्पर विरोधी आदर्श एवं सिद्धान्त रहे है। अतः विश्व मे शान्ति व्यवस्था और संघर्ष की स्थिति को समाप्त करने के लिए आवश्यक है कि नैतिक मूल्यों पर बल दिया जाये और दण्डनीति को प्रोत्साहित किया जाये। आदर्शवादी विचारधारा का वर्णन करते हुए कोलाम्बिस और वुल्फ ने कहा है कि "आदर्शवादियों के लिए राजनीति एक अच्छी सरकार की कला है न कि सम्भावित सरकार की कला। एक अच्छा राजनीतिक व्यक्ति वह नहीं करता जो सम्भव होता है बल्कि वही करता है जो अच्छा है। वह अपने सह - मानवों को आन्तरिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर, अच्छा जीवन तथा सम्मान प्रदान करवाता है।

विश्व के सर्वाधिकारवादी प्रभाव में कमी आनी चाहिए तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों को इतना प्रभावशाली बनाया जाना चाहिए कि दण्डनीति का प्रभाव कम से कम हो। इस प्रकार आदर्शवादी दृष्टिकोण अन्ततः विश्व संघ के विचार का समर्थक है।

आदर्शवादी विचारधारा के समर्थकों में आधुनिक समय में बर्ट्रेन्ड रसेल का नाम उल्लेखनीय है। रसेल ने विश्व में अशान्ति और युद्ध के कारणों में मानव के संघर्षात्मक मनोवेगों को उत्तरदायी माना है। शान्ति और सहयोग की भावना को विकसित करने के लिए रसेल ने मानव के संरचनात्मक मनोवेगों को विकसित करने का अवसर दिया है।

रसेल का मत है कि अनावश्यक प्रतिस्पर्धा - शक्ति की लालसा और वैर को जन्म देने वाली अधिकार लिप्सा के स्थान पर रचनात्मक प्रेरणाओं को अपनाना और उनका पोषण करना होगा। तभी विश्व के राष्ट्रों के मध्य प्रेम और सहयोग का वातावरण पनपेगा। उनका कहना है कि अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के लिए निःशस्त्रीकरण आवश्यक है। ऐसा होने पर ही विश्व - सरकार की कल्पना की जा सकती है।

आदर्शवादी दृष्टिकोण संस्थावादी तथा विधिवादी अध्ययन पर बल देता है। इसमें अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की समस्याओं के समाधान के लिए तीन तत्वों पर बल दिया गया है—

(1) राष्ट्रों को अपने अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार में

Page No.
Date

के नैतिक सिद्धान्तों पर चलना चाहिए और परम्परागत शक्ति राजनीति से दूर रहें।
(ii) विश्व सरकार का निर्माण किया जाये।
(iii) सर्वसत्तावादी दलों के अस्तित्व को समाप्त किया जाये।

आलोचना – आदर्शवादी सिद्धान्त की आलोचना निम्नलिखित आधारों पर की गयी है—
(i) आदर्शवादी व्यवस्था के लिए यह आवश्यक है कि सभी राज्य पारस्परिक सम्बन्धों में सैनिक शक्ति को त्यागकर उसके स्थान पर नैतिक सिद्धान्तों का पालन करें। यह निकट भविष्य में सम्भव नहीं लगता। मॉर्गेन्थो के शब्दों में "इस विश्व में परस्पर विरोधी स्वार्थ और संघर्ष इतने अधिक प्रबल हैं कि इनके होते हुए नैतिक सिद्धान्तों को पूर्ण रूप से क्रियान्वित नहीं किया जा सकता है।"
(ii) आदर्शवादी व्यवस्था लाने के लिए उग्र सैनिकवादी हिंसक शक्तियों का पूर्ण विरोध और दमन किया जाना आवश्यक है।

इन्हीं कारणों से वर्तमान समय में आदर्शवाद का सिद्धान्त शीघ्रता के साथ अपनी उपयोगिता खोता चला जा रहा है। यद्यपि आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता शान्ति और नैतिकता का मार्ग ही है

Khushbu Kumari
19th Aug. 2020

Scanned with CamScanner